पश्चिमीकरण (WESTERNization) से भारतीय समाजों पर प्रभाव

आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन लाने के लिये जिन प्रक्रियाओं व सामाजिक शक्तियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उसमें पश्चिमीकरण की प्रक्रिया विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वैसे सुजला सुफला शस्य श्यामला भारत अति प्राचीन काल से ही अनेक विदेशी आक्रमणों का शिकार बनता रहा है। परन्तु अंग्रेजों ने अपने लम्बे शासन काल में भारत का घनिष्ठ परिचय पश्चिम या पाश्चात्य संस्कृति से न केवल कराया बल्कि इस ढंग से शासन व्यवस्था को व्यवस्थित किया कि भारतीय समाज में अनेक उल्लेखनीय परिवर्तन स्वतः ही उत्पन्न हो गये। इस प्रकार पश्चिमीकरण की प्रक्रिया ने सम्पूर्ण भारतीय जनजीवन को प्रभावित किया और परिवर्तनों को गति प्रदान की। वैसे तो परिवर्तन सदा से होता रहता है। परन्तु पश्चिमीकरण के फलस्वरूप भारतीय समाज में परिवर्तन की गति अत्यन्त तेज हो गयी और ~~सामाजिक~~ सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण परिवर्तन उभरकर सामने आये। ये परिवर्तन अच्छे थे या बुरे, यह दूसरा प्रश्न है। वास्तविक तथ्य यह है कि पश्चिमीकरण ने भारत में द्रुत सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

भारत में अंग्रेजों ने लगभग 150 वर्षों के शासन के कारण भार समाज एवं संस्कृति में अनेक परिव हुए। भारतीयों के खान-पान, रहन सहन, प्रथाओं, आर्थिक, धार्मिक राजनीतिक एवं सामाजिक संस्था तथा संस्कृति के क्षेत्र में व्यापक प्रभाव पड़े। पश्चिमीकरण के फलस्वरूप भारतीय समाज एवं संस्कृति पर निम्नलिखित प्रभाव पड़े हैं:

(1) खान पान व रहन-सहन प प्रभाव (Impact on food and Liv habits)

अंग्रेजों के सम्पर्क के कारण भारतीयों के खान-पान एवं रहन-सहन में कई परिवर्तन हुए। परम्परा व्यवस्था में ब्राह्मण एवं उच्च वर्ग के व्यक्ति शाकाहारी थे, वे माँस एवं मदि का सेवन नहीं करते थे। कई प्रक के कन्द मूलों जैसे - आलू, मटर, प्याज, चुकन्दर आदि का भी प्रयोग नहीं करते थे। भोजन से पूर्व स्नान किया जाता था और आंगन को लीपकर शुद्ध करके शुद्ध वस्त्र पहन कर भोज किया जाता था। किन्तु अंग्रेजों के कारण अब सभी जातियों के व्यक्ति माँस, मदिरा, अण्डे आदि का

का संकुल करने लगे और साली प्रकार के आभूषण कन्द मूल आलू मद्धु स्थान आदि जो पहले नहीं सेवन करते थे अब करने लगे। पहले जमीन पर बैठ कर खाना खाते थे और अब उसके जगह पर टेबुल कुर्सी का उपयोग करने लगे है। हाथ से भोजन करने की परम्परा छोड़ कर अब भारतीय लोग भी काटा-चम्मच का उपयोग करने लगे है।

(2) सामाजिक जीवन और संस्थाओं में परिवर्तन Change in Socialastic and Institutions) → पश्चिमीकरण के कारण भारतीयों के सामाजिक जीवन एवं संस्थाओं मे भी अनेक परिवर्तन घटित हुए है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित परिवर्तन हुए।

(1) जाति प्रथा पर प्रभाव → अंग्रेजों के आने के पूर्व भारत मे जाति प्रथा का कठोर रूप पाया जाता था जाति व्यवस्था मे संस्तरण पाया जाता था। जिसमे विभिन्न जातियों की स्थिति ऊँच नीची थी। जातियों मे परस्पर खान-पान एवं मेल जोल पर प्रतिबन्ध थे। और छुआ छूत की प्रथा प्रचलन था। प्रत्येक जाति अपनी वंश परम्परागत व्यवसाय था। और विभिन्न जातियाँ जजमानी प्रथा द्वारा एक दूसरे का सेवा करती थी। एक जाति के व्यक्ति अपनी ही जाति मे शादि विवाह करता था

प्रत्येक जाति में जाति के पंचायत थी जो अपनी जातियों के सदस्यों को नियम पालन करवाता था। उनका उल्लंघन करने पर दंड देता था। परन्तु अंग्रेजों के आने के बाद उद्योगों की स्थापना की औद्योगीकरण व नगरीकरण की नीव रखी, यातायात एवं सन्चार के नवीन साधनों जैसे रेल, बस, वायुयान जहाज सड़क रेल डाक तार प्रेस अखबारों से भारतीय को परिचित कराया गया। विभिन्न जातियों के लोग एक साथ कारखाने में काम करने लगे। और सभी साधनों का उपयोग करने लगे। और एक साथ काम करने से छुआछूत एवं जाति की उच्चता और निम्नता की भावना शिथिल हुई। एक जाति के व्यक्ति दूसरी जाति के व्यवसाय को भी करने लगे। खान-पान सम्बन्धित जातीय नियमों में कमी आयी तथा जाति पंचायतों का महत्व कम होता गया।

Kumkum Mishra [illegible]
Date - [illegible]

DR Vijant Kumar Mishra
Asst Prof (Guest Faculty), Part time
Dept of Sociology
B.A Hons Paper II Part 1.